भारतीय काव्यार्थ विवेचन परंपरा और अन्य निबंध

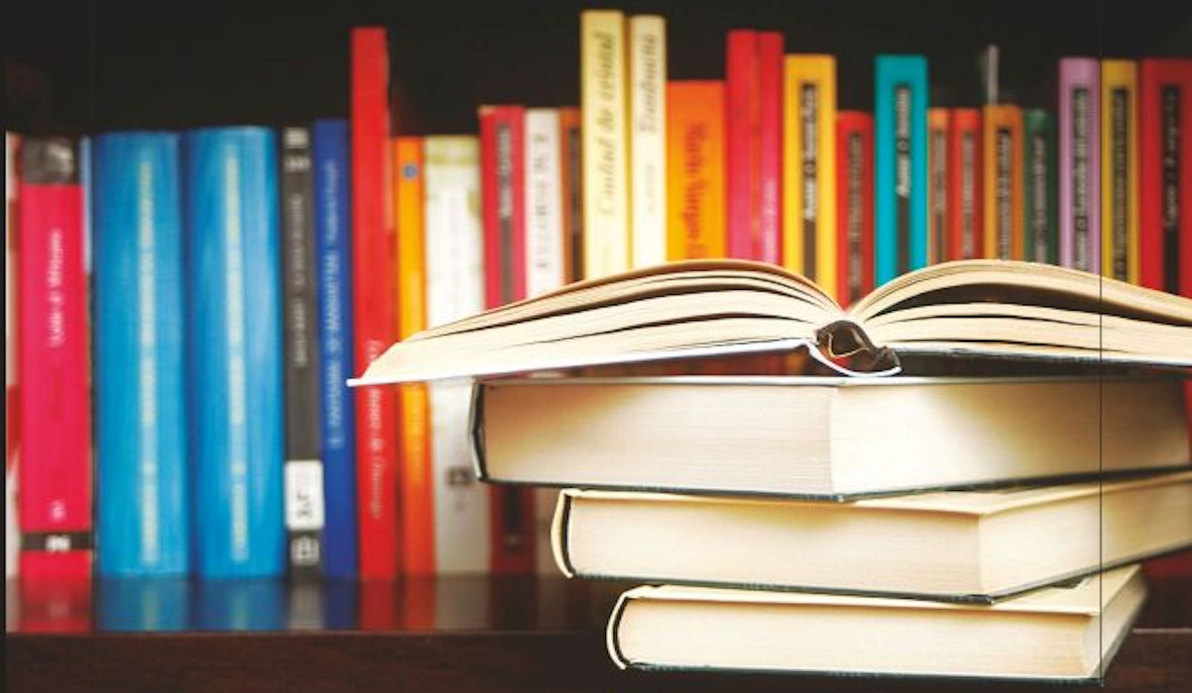

दयाशंकर

भारतीय काव्यार्थ विवेचन परम्परा
और अन्य निबन्ध

भारतीय काव्यार्थ विवेचन परम्परा और अन्य निबन्ध

दयाशंकर

अनुज्ञा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-93-93580-39-9

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
मीना-किशन सिंह

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

BHARTIYA KAVYARTH VIVECHAN PARAMPARA AUR ANYA NIBANDH
Literary Criticism by Dayashankar

मेरी बात

'भारतीय काव्यार्थ विवेचन परम्परा और अन्य निबन्ध' का पुस्तकाकार रूप में आना न तो उद्देश्य रहित है, न ही प्रयोजन शून्य। विभिन्न संगोष्ठियों में सक्रिय भागीदारी का परिणाम है–पुस्तक का आधे से अधिक हिस्सा। एक अध्यापक होने के नाते जब-तब हिन्दी की अनेक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में जाना होता रहा है और विषय-विशेषज्ञ से लेकर बीजवक्ता की भूमिका निभाना पड़ा है। वक्तव्य के लिए बनाये गये नोट कालान्तर में लेख की शक्ल में बदल गये। कभी तो ऐसा भी हुआ है कि वक्तव्य का एक पहलू था, बाद में उसके अन्य पक्षों तक विस्तार कर दिया। अनुवाद के क्षेत्र में महादेवी वर्मा के योगदान का पर प्रसंगत: वक्तव्य बाद में तमिल, मराठी, गुजराती से महिलाओं के हिन्दी अनुवाद तक विस्तृत हो गया। पुस्तक के कुछ आलेख पत्रिकाओं के सम्पादकों, पुस्तक सम्पादकों के विशेष आग्रह पर लिखे गये हैं। इनके अलावा एक आलेख पुस्तक की भूमिका के तौर पर तैयार करना पड़ा। इक्का-दुक्का आलेखों को छोड़कर शेष आलेख हिन्दी की छोटी-बड़ी पत्रिकाओं-प्रज्ञा, साहित्य वीथिका, समन्वय पश्चिम, पंचशील शोध समीक्षा, प्रगतिशील वसुधा, मड़ई, युद्धरत आम आदमी आदि, पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। इनके सम्पादकों के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

अलग-अलग उद्देश्य ओर प्रयोजन के कारण लिखे आलेखों में स्तर भेद देखने को मिलेगा। पुस्तक के प्रारम्भिक आलेख शोधकेन्द्रित होने के कारण स्तरीय साहित्य-संस्कार और समझ की माँग करते हैं। बाकी छात्रोपयोगी हैं। कुल मिलाकर प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न स्वाद और स्तर के आलेखों का संकलन है।

'भारतीय काव्यार्थ विवेचन परम्परा और अन्य निबन्ध' पुस्तक का प्रकाशन दो सालों के बाद हो रहा है। अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली के मालिक भाई सुधीर वत्स इन बीचों शारीरिक और पारिवारिक परेशानियों में उलझ गये थे, बावजूद इसके वे पुस्तक छापने से पीछे नहीं हटे। इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। अब पुस्तक पाठकों के हाथों में है। उनके प्रतिभाव और सुझाव का स्वागत है।

26 जनवरी, बसंत पंचमी, 2023
वल्लभ विद्यानगर

डॉ. दयाशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष–हिन्दी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर
मो. 9427549364

अनुक्रम

मेरी बात 5

- भारतीय काव्यार्थ विवेचन परम्परा : सामर्थ्य और प्रभाव 9
- महाभारत की विरासत : सन्दर्भ-आधुनिक हिन्दी साहित्य 32
- दिनकर का सांस्कृतिक चिन्तन : संस्कृति के चार अध्याय 50
- भारतीय समाज और स्वातन्त्र्योत्तर ग्राम केन्द्री हिन्दी उपन्यास 60
- प्रेमचन्द और पन्नालाल पटेल की कहानियाँ : सामाजिक सरोकार 73
- नारी-विमर्श की अवधारणा, चुनौतियाँ और सीमायें 86
- भारतीय काव्य का स्वरूप व विकास 99
- लम्बी कविता और खंडकाव्य का स्वरूप एवं विकास 117
- भक्ति आन्दोलन और शंकरदेव 134
- पर्यावरण और अवधी लोकगीत 143
- हिन्दी शोध के नये उभरते हुए क्षेत्र 154
- समाज, साहित्य और सिनेमा 162
- मौजूदा समाज, साहित्य और आतंकवाद 169
- हिन्दी अनुवाद में महिलाओं का योगदान 177
- तमिल से हिन्दी अनुवाद की दिशायें 188
- गुजराती और मराठी से हिन्दी अनुवाद में महिलाओं का योगदान 193

सन्दर्भ ग्रन्थ 199

भारतीय काव्यार्थ विवेचन परम्परा : सामर्थ्य और प्रभाव

1

इधर 30-35 सालों से पश्चिम के विकसित देशों की ओर से एक ताकतवर विचारधारा भारत जैसे विकासशील पूर्वी देशों में आ गयी है जिसका नाम है– उत्तर-आधुनिकता और भूमंडलीकरण। उसका दावा है कि कुछ बचनेवाला नहीं है। इतिहास, परम्परा, उसके महान विचार, महान आदर्श और मूल्य, महानायक; यहाँ तक कि साहित्यकार और साहित्य का भी अन्त होनेवाला है। पश्चिम के ऐसे फतवेवाले दौर में यदि हम 'काव्यार्थ विवेचन की भारतीय परम्परा' के माध्यम से उसकी 'सामर्थ्य' और 'प्रभाव' का अनुसन्धान करने की मंसा रखते हैं तो यह पश्चिमी देशों के साहित्यिक फतवेबाजी का ही प्रतिरोध है। इस अनुसन्धान का उद्देश्य और प्रयोजन 'काव्यार्थ विवेचन की भारतीय परम्परा' की गठरी को अपने सिर पर लादना नहीं है, न तो उसकी तरफ अँखमुँद वापसी है, न ही वर्तमान साहित्य को अनदेखा करते हुए उसकी उपेक्षा करना है; बल्कि उस सामर्थ्य और महत्त्वपूर्ण कड़ी को खोजना है जिसके कारण हमारा काव्यार्थ विवेचन 'भारतीय' है, जो उसकी समृद्ध परम्परा का निर्माण करता है और उस विरासत को जीवन्त रूप में आधुनिक हिन्दी, संस्कृत आलोचना को न केवल सौंपता है, बल्कि उसकी ताकत भी बनता है। 'काव्यार्थ विवेचन की भारतीय परम्परा' की मेरी दृष्टि में यही प्रासंगिकता, अर्थवत्ता और सार्थकता है। भारतीय काव्यार्थ विवेचन हमारे समय के साहित्य के सन्दर्भों में चर्चित, विवेचित और अर्जित होकर ही प्रासंगिक, अर्थवान और सार्थक बन सकता है। मैं आज उस भारतीय मनीषी को फिर से याद करना चाहता हूँ जिनका नाम कविकुलगुरु कालिदास है, जिन्होंने परम्परा और वर्तमान, दोनों समय के काव्यों को देखने-अर्जित करने और जोड़ने की सही दृष्टि दी है। उन्होंने कहा है कि–

पुराणमेव न साधु सर्वं न चाऽपि काव्यं नवमेत्यवद्यम्
सन्तः परिच्छादन्तरत भजन्ते मूढः परः प्रत्ययनेय बुद्धिः।

पुराना काव्य हो या नया, दोनों में सब कुछ अच्छा-ही-अच्छा नहीं होता है। मूर्ख लोग तो बिना जाँचे-परखे दोनों को अपने सिर पर ढोते हैं, लेकिन जो बुद्धिमान हैं वे दोनों की परीक्षा करने के पश्चात् उनमें जितना अच्छा है उतना ही ग्रहण करते हैं।

आधुनिक काल में जब भारतीय विश्वविद्यालयों में सन् 1920 के बाद हिन्दी साहित्य को पढ़ने-पढ़ाने का विषय बनाया जाने लगा तो सबसे बड़ी चुनौती यह उठ खड़ी हुई उसे किस दृष्टि से पढ़ा-पढ़ाया जाये। भारतीय काव्यार्थ विवेचन की दृष्टि से या पश्चिमी काव्यार्थ विवेचन की दृष्टि से। हमारा हिन्दी साहित्य ऐसे दो राहे पर खड़ा था जिसका सबसे लम्बा सिरा रीतिकाल,